बहुसंस्कृतिवाद MULTICULTURALISM

Will kymlicka

अध्ययन सामग्री निर्माण

डा शकील हुसैन

shakeelvns27@gmail.com

विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।

दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।

नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

अवधारणा -

बहुसंस्कृतिवाद और सहअस्तित्व परस्पर पूरक है। आधुनिक समय में ये लोकतंत्र की सफलता की शर्त माने जाते हैं। पिछले लगभग एक हजार वर्षों के इतिहास के अवलोकन से पता चलता है सभ्यता के विकास के साथ-साथ आबादियों का विस्थापन होता रहा है, और इस माइग्रेशन में विभिन्न कारणों से उपनिवेशवाद काल में और वृद्धि हुई तथा बीसवी सदी में यह अधिकतम रही।

इस प्रजातीम सम्मिश्रण से समस्याएं यो पैदा हुई और एशिया अफ्रका, लौका अमेरिका में अनेक Ethnic conflicts जातीय संपर्ष पैदा हुए जो होने नहीं चाहिए थे । योरोप , कनाडा, स्कैण्डनेविया आदि ने coexistence सह अस्तित्व का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है । जिसके माध्यम से एक से अधिक संस्कृतियां तथा संख्या में बहुत बड़ी संस्कृतियां अपेक्षाकृत छोटी संस्कृतियों के साथ प्रभुत्व या Hegemony का दावा किए बिना भी साथ-साथ रह सकती हैं। **इस प्रकार बहुसंस्कृतिवाद से अभिप्राय है अनेकसंस्कृतियों का सहअस्तित्व** |

बहु संस्कृतिवाद की विशेषताएं या आधार -

1-सांस्कृतिक विविधता को मान्यता - चार्ल्स टेलर के अनुसार । " पदि हम अपनी विरासत में

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

कोई योगदान नहीं दे सकते तो कम से कम इतना तो सुनिश्चित करें की विविधता बनी रहे।" **विभिन्नता और बहुलता शाश्वत है**। सजातीय Homogenic समाजों में भी विविधता होती हैं भारत , पश्चिम एशिया, योरोप आदि इसके उदाहरण है। इस विविधता को मान्यता न देने से संघर्ष होते हैं। अत: विविध संस्कृतियों का सहअस्तित्व स्वीकारना ही बंहुसंस्कृतिवाद है।

2. **बहुलता के महत्व को स्वीकारता** - बहुसंस्कृतिवार के एक बहुत बड़े विद्वान **विल किमलिका** की यह मान्यला है कि संस्कृतियों की बहुलता सामाजिक गतिशीलता के
लिए न केवल आवश्यक है बल्कि एक ठोस विकल्प भी प्रस्तुत करती है ।

3- **भेदभाव का विरोध या प्रभुत्ववाद का विरोध**
सामाजिक सांस्कृतिक प्रभुत्ववाद बीसवीं 21वीं सदी में राजनीतिक संघर्षों का कारण रहा है। अत: बहुसंस्कृतिवाद में प्रभुत्व का विरोध और सांस्कृतिक समूहों में भेदभाव का निषेध आवश्यक है।

4- **सांस्कृतिक विशिष्टता जैव विविधता**
जैसाकि **विल किमलिका** की मान्यता है कि प्रत्येक संस्कृति चाहे वह आकार और संख्या में चाहे जितनी ही छोटी क्यों न हो उसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान UNIQUE Identity होती है। अत: इसे किसी अन्य संस्कृतिक आपदण्डों से नहीं समझा जा सकता ।यह जैव विविधता जितना विशिष्ट है अतः इसका संरक्षण भी उसी प्रकार आवश्यक है।

5- **उदारवादी स्वतंत्रता समानता आदि से विरोध**
उदारवाद व्यक्ति के व्यक्तिगत अधिकारों स्वतंत्रता और समानता की वकालत करता है। जबकि बहुसंस्कृतिबाद समूह के अधिकारों की मांग करता है। उदारवाद सार्वभौमिक समानता की मांग करता है जबकि बहुसंस्कृतिवाद विशेष संरक्षण की मांग करती है ।
किमलिका के अनुसार " जब हम लोगों से उनको सांस्कृतिक पहचान त्यागने की बात करते हैं तब हम उन्हें किसी ऐसी चीज से वंचित कहते है जिस पर उनका समुचित हक है "

6- **राष्ट्रीय और अप्वासी अल्पसंख्यक** - किमालिका का यह विशिष्ट योगदान है। वे राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों की संस्कृति संरक्षण के पक्ष में है क्योंकि ये हजारों साल से वहीं है। लेकिन अप्रवासी अपनी आर्थिक आवश्यकताओं से आए हैं अतः, उनके सांस्कृतिक संरक्षण की वैसी आवश्यकता नहीं है। लेकिन इस किमलिका के इस विभेद दो स्वीकार नहीं किया जाता।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

भारतीय सनातन माडल

आनोभटद्रा: कृतवो यंतु विश्वतः अच्छे विचारों को चारों ओर से आने दो ऋग्वेद के इस कालजधी महावाक्य से अनुप्राणित सनातन भारतीय संस्कृति में शक, हुण, कुषाण, तुर्क, अफगान ईरानी मुगल सब समाहित हो गए।

भारत ने बहुसंस्कृतिवाद का अद्भुत माडल दुनिया के सामने पेश किया है। फ्रेंच, स्पैनिश, पुर्तशाली, पोलिश, जर्मन आदि राष्ट्रीयताओं के नाम पर योरोप अनेक राष्ट्र राज्यों में विभाजित हो गया किन्तु भारत में गुजराती, मराठी, तेलुगु, उड़िया, बंगाली, पंजाबी, असमी, तमिल, कन्नड, मलयालम राष्ट्रीयताएं राष्ट्र राज्यों में नहीं बंटी बल्कि सहअस्तित्व के साथ हजारो साल से बनी हुई है । भारत ने बहुसंस्कृतिवाद को न केवल सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर बल्दि राजनीतिक स्तर पर भी बनाए रखा है । अत: बहुसंस्कृतिबार का भारतीय माडल सोरोपियन माडल से अधिक पुराना और प्रभावी रहा है। इसी कारण भारतीय राष्ट्रवाद राजनीतिक होने के साथ सांस्कृतिक राष्ट्रबाद भी है। इतना ही नहीं प्रत्येक भाषायी संस्कृतियों की अनेक उपसंस्कृतियां भी है। उनमें भी उसी प्रकार का सहअस्तितत्व बना हुआ है। अत: बंदुसंस्कृतिवाद केवल एक एजनीतिक उपकरण नहीं बरिक सामाजिक, राजनीतिक अवधारणा भी है। भारत का सनातन माडल बहुसंस्कृतिवाद के पश्चिमी माडल से बेहतर और स्थायी माडल है जिस पर अधिक शोध किए जाने की आवश्यकता है ।

गृह कार्य

1-बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा स्पष्ट कीजिए ।

2- बहुहंस्कृतिवाद की विशेषताएं बताइए ।।

3- बहुसंस्कृतिवाद पर विल किमलिका के विचार बताइए ।

संदर्भ

आनलाइन रिसोर्स

https://www.thoughtco.com/what-is-multiculturalism-4689285

https://comparativemigrationstudies.springeropen.com/articles/10.1186/s40878-018-0080-8

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Will_Kymlicka

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE